Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college
Darbhanga

Economics XII . D.A

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम

Lecture . N . 27

Law of Diminishing Marginal Utility.

उपभोक्ता जैसे-जैसे किसी वस्तु की अधिक से अधिक इकाइयों का प्रयोग करता है। तो उससे मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है इस नियम के क्रियाशील होने के कारण कई है। प्रत्येक आवश्यकता विशेष की संतुष्टि की जा सकती है। वस्तुएँ एक दुसरे के स्थानापन्न नहीं होती तथा वस्तुओं का वैकल्पिक एवं अनेक प्रयोग होता है।

मनुष्य की आवश्यकताएँ अनंत होती है जब एक आवश्यकता की पूर्ति की जाती है तब दुसरी आवश्यकता महसूस होने लगती है। लेकिन आवश्यकता की एक विशेषता यह है कि किसी आवश्यकता विशेष की पूर्णरूपेण संतुष्टि की जा सकती है आवश्यकता की इसी विशेषता पर उपभोग का सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम आधारित है। मनुष्य स्वभाव से किसी एक वस्तु की बहुत इकाईयों को पसंद नहीं करता है। इसी प्रकार जब आवश्यकता विशेष की संतुष्टि के लिए ज्यों-ज्यों किसी वस्तु की उत्तरोत्तर अधिक इकाइयों का प्रयोग करता है। इस वस्तु की प्रति उसकी अभिरूची कम होती जाती है, एक स्थिति यह भी आती है कि उपभोक्ता में वस्तु के उपभोग के प्रति अनिच्छा उत्पन्न हो जाती है। जब वस्तु का उपभोग लगातार किया जाता है तब उसकी उत्तरोत्तर अगली इकाईयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता क्रमश: कम होती जाती है एक ऐसी स्थिति भी आती है जब आवश्यकता की पूर्ण रूपेण संतुष्टि हो जाती है तथा उसके बाद भी उपभोग की प्रक्रिया जारी रखी जाती है अनुपयोगिता प्राप्त होती है, मानव स्वभाव की इस प्रकृति पर सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम आधारित है इसे हम सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम कहते हैं। इस नियम को सर्वप्रथम बताने का श्रेय अर्थशास्त्री गोसेन को जाता है इस लिए इस नियम को गोसेन का पहला नियम भी कहा जाता है।

प्रो० मार्शल ने भी इस नियम का विस्तार से वर्णन किया है।

प्रो० मार्शल के अनुसार – " एक व्यक्ति के पास किसी वस्तु की जो मात्रा होती है उसमें वृद्धि होने से उसे जो अतिरिक्त लाभ होता है वह उस वस्तु की मात्रा के साथ-साथ कम होती जाती है "

प्रो० चैपमैन के अनुसार " किसी वस्तु की जितनी मात्रा हमारे पास होती है उस वस्तु की मात्रा में वृद्धि के लिए उतने ही हम कम इच्छुक होते है अथवा

उतना ही अधिक हम उसकी अतिरिक्त इकाइयाँ नहीं चाहते हैं। "

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि हम जैसे-जैसे किसी वस्तु की निरंतर इकाइयों का उपभोग करते जाते हैं या किसी समान वस्तु की अधिक इकाइयाँ हमारे पास जमा हो जाती है तो उससे मिलने वाली उपयोगिता भी लगातार कम होती जाती है।

इस प्रकार इस नियम की व्याख्या एक उदाहरण द्वारा भी किया जा सकता है। हम उदाहरण देकर इस नियम को ज्यादा स्पष्ट कर सकते हैं। उदाहरण के लिए इस तालिका का उपयोग किया जा सकता है।

रोटी की इकाईयाँ	सीमान्त उपयोगिता
1	5
2	3
3	2
4	1
5	0
6	-1
7	-2

तालिका से स्पष्ट है कि जब उपभोक्ता भूखा है तब भूख की तीव्रता के कारण पहली रोटी से उसे 5 के बराबर उपयोगिता मिलती है पहली रोटी खाने से उसकी भूख कुछ कम होती है इसलिए दूसरी रोटी से पहले की तुलना में कम उपयोगिता 3 के बराबर होती है उसी प्रकार तीसरी और चौथी रोटी से प्राप्त उपयोगिता क्रमशः घटती जाती है जब उपभोक्ता पाँचवी रोटी का उपभोग उपभोग करता है तब उसकी भूख पूर्णतः मिट जाती है तथा उपभोक्ता को शून्य के बराबर उपयोगिता मिलती है इसके बाद रोटी के प्रति अनिच्छा हो जाती है फिर भी उपभोग जारी रखता है तो उसे रोटी की अनुपयोगिता प्राप्त होती है इसलिए वह जब छठी तथा सातवी रोटियों को उपभोग में लाता है तब उसे क्रमशः -1 तथा -2 के बराबर अनुपयोगिता या ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त होती है।

इस प्रकार इस तालिका से स्पष्ट हो रहा है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे रोटियों का उपभोग करता जाता है वैसे-वैसे रोटी की अगली इकाई से मिलने वाली उपयोगिता घटती जाती है इस प्रकार सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम यह बताता है कि जैसे-जैसे वस्तु के उपभोग की मात्रा में निरंतर वृद्धि की जाती है उस वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता लगातार घटती जाती है। इस नियम को रेखा चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

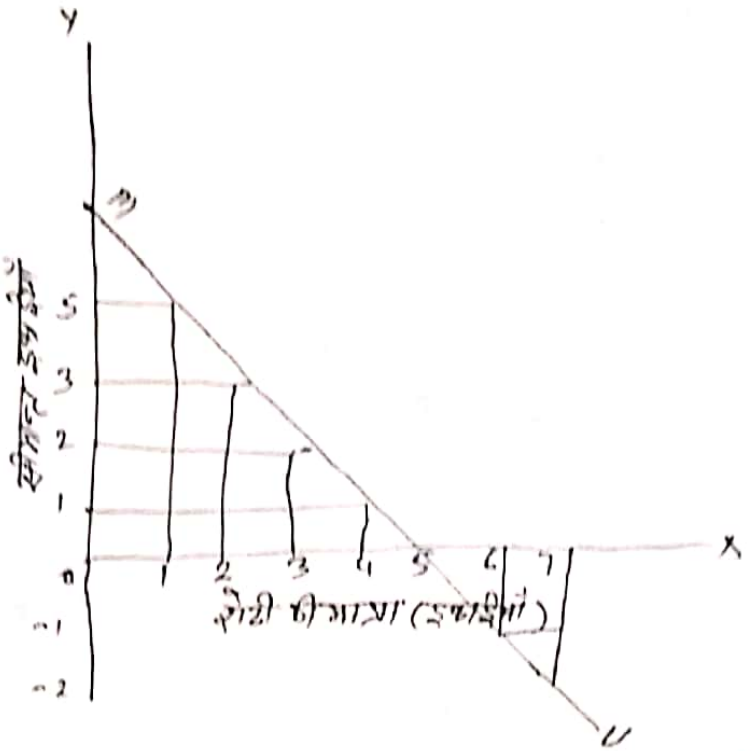

इस रेखा चित्र में OY अक्ष पर सीमान्त उपयोगिता तथा OX अक्ष पर रोटी की इकाईयाँ को दर्शाया गया है। ज्यों ज्यों रोटी की अगली इकाईयों का उपयोग किया जाता है। रोटी से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता कम होती जाती है यह सीमान्त उपयोगिता रेखा MU की ढाल से स्पष्ट है कि उपभोक्ता को क्रमश: पहली रोटी से 5, दूसरी रोटी से 3, तीसरी रोटी से 2 चौथी रोटी से 1 तथा पाँचवी रोटी से 0 शून्य उपयोगिता मिलती है

जो उपभोक्ता की पूर्ण संतुष्टि की स्थिति को दर्शाता है इसके बाद भी यदि उपभोक्ता रोटी के उपभोग को जारी रखता है तो उसे छठी रोटी से -1 तथा सातवीं रोटी से -2 के बराबर ऋणात्मक उपयोगिता मिलती है। अधिक रोटी खाने से उपभोक्ता बदहजमी का शिकार हो सकता है। अत: अनुपयोगिता की प्राप्ति होती है इस प्रकार रेखा चित्र द्वारा भी स्पष्ट हो जाता है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे रोटियों का उपभोग उत्तरोत्तर बढ़ाता जाता है। रोटी की अगली इकाईयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता घटती जाती है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के लागू होने के प्रमुख तीन कारण निम्नलिखित हैं।

1. प्रत्येक आवश्यकता विशेष की संतुष्टि पूर्ण रूप से की जा सकती है आवश्यकता की इस विशेषता पर सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम आधारित है। इसलिए जब कोई भी आवश्यकता उत्पन्न होती है तब उस आवश्यकता की संतुष्टि की जा सकती है। जब तक आवश्यकता की तीव्रता अधिक होती है। वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता अधिक होती है लेकिन आवश्यकता की संतुष्टि के लिए हम जैसे-जैसे वस्तु की उत्तरोत्तर अधिक इकाईयों का प्रयोग करते जाते हैं वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता लगातार घटती जाती है अर्थात सीमान्त उपयोगिता में ह्रास होता है।

Scanned by CamScanner

2. वस्तुएँ पूर्ण रूप से एक दूसरे के स्थान पर व्यवहार करने योग्य नहीं होती अर्थात वस्तुएँ एक दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न नहीं होती। इसलिए एक वस्तु का प्रयोग दूसरी वस्तु के बदले पूर्णतया नहीं किया जा सकता है। उसका प्रयोग एक स्थिति तक ही दूसरी वस्तु के बदले किया जा सकता है। उनका उचित अनुपात में ही प्रयोग हो सकता है। जैसे हम भूख मिटाने के लिए रोटी के बदले दाल का प्रयोग पूर्णतः नहीं कर सकते। इसका प्रयोग एक सही अनुपात में ही किया जा सकता है अन्यथा पूर्ण संतुष्टि नहीं मिलेगी। इस प्रकार सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम लागू होने के दूसरा कारण यह है कि वस्तुएँ एक दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न नहीं होती

3. प्रत्येक वस्तु के अनेक प्रयोग हो सकते हैं बामोल (Baumol) के अनुसार इस नियम के क्रियाशील होने का एक कारण यह है कि हम अधिकतम महत्व वाले प्रयोग को पहला स्थान देते हैं यदि हमारे पास केक का एक ही टुकड़ा है तो हम अपने बच्चों को खिलाएंगे। यदि हो तो दूसरा टुकड़ा पत्नी को खिलाएंगे। यदि तीसरा टुकड़ा हो तो हम अपने लिए रखेंगे। और चौथा होने पर अपनी माता को देंगे। स्पष्ट है कि प्रत्येक केक की मात्रा कम महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए प्रयोग में लाई जाती है केक की मात्रा बढ़ाने पर उसकी सीमान्त उपयोगिता घटती है।

इस प्रकार सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम एक ऐसा नियम है जो कि यह स्पष्ट करता है कि यदि अन्य बातें यथावत रहे तो उपभोक्ता जैसे-जैसे किसी वस्तु की उत्तरोत्तर अधिक इकाईयों का प्रयोग करता है तो उसे मिलने वाली सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है इस नियम के क्रियाशील होने के कई कारण है, प्रत्येक आवश्यकता की विशेष की संतुष्टि की जा सकती है। वस्तुएँ एक दूसरे के पूर्ण स्थानापन्न नहीं होती तथा वस्तुओं का वैकल्पिक एवं अनेक प्रयोग होता है।

Scanned by CamScanner